कल्पना चावला hindi biography

2nd class के बच्चे अपनी विज्ञान की क्लास शुरू होने का इंतजार कर रहे थे। Mr. Ajay Verma उन्हे विज्ञान पढ़ाते है। वे बहुत मजे और अच्छे से उन्हे पढ़ाते है।

Mr. Verma class में दाखिल होते हैं सारे बच्चों ने उनका अभिवादन किया। गुड मॉर्निंग सर!!

"गुड मॉर्निंग चिल्ड्रन" ! Mr. Verma ने मुस्कान के साथ जवाब दिया। आज हम एक पाठ पढ़ेंगे। Space के अंदर जाएंगे। शुरू करने से पहले मैं आप सब को कुछ पिक्चर्स दिखाना चाहूंगा।

वो कौन है?? एक तस्वीर पर हाथ रखते हुए mr Verma ने पूछा।

" Neil Armstrong", सोनिया ने कहा। वे वो आदमी जिन्होंने चांद पर पहला कदम रखा।

Good! अब मुझे बताओ की ये कौन है??

" Rakesh Sharma" अमन ने कहा। वे पहले भारतीय थे जो space में गए थे।

Very good ! Mr Verma ने कहा। " ये कौन है"!! ?

" कल्पना चावला" सारे बच्चों ने चिल्लाते हुए बताया।

" सर कृपया करके हमे इनके बारे में बताइए। सोनिया ने कहा।

कल्पना चावला जब एक छोटी लड़की थी, वो एक छोटे से कस्बे में रहती थी जो करनाल, हरियाणा में है।

वो बहुत intelligent थीं। वे अपनी पढ़ाई पर बहुत मेहनत करती थी। वो विज्ञान को बहुत पसंद करती थी आप सब की तरह।

यहां तक की एक छोटी बच्ची होते हुए भी वो आसमान , चांद , सितारों के बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक थी। वो आकाश मे उड़ने का सपना देखती। वो सितारों तक पहुंचने का सपना देखती। गर्मियों की रात में वो अपने परिवार के साथ तारो के नीचे आंगन में सोती थी।

वो उनसे बहुत मोहित होती थी। वे किसी दिन उन तक पहुंचने का सपना देखती थी। उन्होंने अपनी विज्ञान की पढ़ाई जारी रखी। उसके बाद वो USA उच्च शिक्षा प्राप्त करने USA चली गई वहां उन्होंने US army भी ज्वाइन की। "Montu", जैसे उनको बोला गया था, उन्होंने कड़ी मेहनत की और अपने सपनो का साकार किया। वो स्पेस में जाने वाली पहली भारतीय महिला बनी। वो पहली बार स्पेस में 1997 में गई। उनके साथ 5 astroaunts थे। वो जिस स्पेस शटल में उड़े थे उसका नाम coloumbia था।

"कल्पना दूसरी बार स्पेस में 16 जनवरी, 2003 में गई। और उन्होंने वहां अपना शोध कार्य किया। लेकिन दुर्भाग्यवश, उनका स्पेस शटल, coloumbia, क्रैश हो गया जब वो धरती पर वापस आ रही थी।

कल्पना चावला Ist जनवरी, 2003″ में उनकी मृत्यु हो गई।

Mr Verma कुछ देर रुके। फिर बोले," भारत को हमेशा कल्पना चावला पर गर्व होगा। तुम सब को भी अपने सपने पूरे करने के लिए मेहनत करनी चाहिए।

इस पर, स्टूडेंट्स ने मेहनत करने का promised किया।

दो बिल्ली और एक बंदर hindi story

एक बार की बात है, दो भूखी बिल्लियां गली में घूम रही थी।

अचानक उन्होंने देखा की एक घर का दरवाजा खुला हुआ है वो दोनो घर के अंदर गईं। और उन दोनो को एक साथ एक ब्रेड का टुकड़ा दिखाई दिया।

दोनो एक साथ उस ब्रेड पर कूदी और उसे लपकने की कोशिश करने लगी।

“मैने इसे पहले देखा था! ये मेरा है,” पहली बिल्ली बोली।

“क्या झूठ बोल रही हो! मैने इसे पहले देखा था ये मेरा है” तुम इससे दूर रहना। दूसरी बिल्ली ने कहा!.

वो एक दूसरे से लड़ रही थी की तभी एक बंदर वहां आया। उसने उनसे विनम्रता पूर्वक नमस्ते किया। और बोला, में तुम दोनो को देख रहा था प्यारी बिल्लियों”!

मैं देखा की तुम दोनो ने एक साथ इस ब्रेड को देखा था।

वो अच्छा ये होगा की तुम दोनो को इसका बराबर हिस्सा मिलना चाहिए।

मैं इतनी प्यारी बिल्लियों को परेशानी में नही देख सकता!!

तो मैं इस ब्रेड को बराबर हिस्से में बाटने में तुम्हारी मदद करूंगा।

दोनो बिल्लियां बहुत खुश हो गईं। अब हम दोनो को ब्रेड का बराबर हिस्सा मिल सकता है उन्होंने उत्साहित होकर बोला।

फिर बंदर एक तराजू खरीद कर लाया और उसने तराजू के दोनो पलड़ो पर ब्रेड के असमान हिस्सो को रखा।

ब्रेड का एक टुकड़ा दूसरे टुकड़े से भारी होना ही था। चालाक बंदर ने दोनो बिल्लियों से बोला, चिंता मत करो!! मैं तुम दोनो को इसका बराबर हिस्सा ही दूंगा। आखिर ब्रेड तो तुम्हारा ही है ना।

तो, बंदर ने भारी वाले हिस्से के ब्रेड के टुकड़े को ज्यादा मात्रा में तोड़ दिया और खा गया।

उसने फिर उसे तराजू पर रख दिया।अब दूसरा टुकड़ा पहले वाले टुकड़े से भारी हो गया। उसने फिर बिल्लियों से कहा, ये मेरी जिम्मेदारी है, में ध्यान रखूंगा की तुम दोनो को बराबर हिस्से में ब्रेड मिले। ये मुझ पर छोड़ दो। फिर से उसने बड़े टुकड़े में से ज्यादा मात्रा में टुकड़ा तोड़ा और खा गया। फिर से दूसरा हिस्सा पहले हिस्से

से ज्यादा भारी हो गया। ये सिलसिला चलता रहा और आखिर में वहां ब्रेड नही बचा।

फिर चालाक बंदर बोला, " ओह मेरी गरीब बिल्लियों वो ब्रेड सच में तुम दोनो के लिए था ही नही। इसलिए उसने बराबर हिस्से में होने से इंकार कर दिया। यह कह कर बंदर वहां से भाग गया। बेचारी बिल्लियां कुछ न कर सकी। वो बस एक दूसरे की तरफ उदासी से देखती रहीं।

Rabbit and tortoise story in hindi

खरगोश और कछुआ की कहानी-1

एक जंगल में कछुआ और खरगोश दो दोस्त रहते थे।दोनो में गहरी मित्रता थी एक बार खरगोश और कछुआ दोनो नदी के किनारे बैठे थे तभी कछुआ बोला

खरगोश भाई इस जंगल में सबसे बहादुर कौन है?

खरगोश बोलता हैं की सबसे बहादुर तो शेर राजा ही हैं

कछुआ, अच्छा और सबसे तेज और चालाक कौन है?

खरगोश बोला की सबसे चालाक तो लोमड़ी बहन हैं

कछुआ बोला हा पर आज तक इस जंगल में कभी किसी की प्रतियोगिता नही हुई न क्यू ना हम दोनो में ही एक दौड़ की प्रतियोगिता हो जाए।

खरगोश हंसा और बोला क्या?

तुम्हारी और मेरी दौड़ प्रतियोगिता! तुम कछुए हो को इतना धीरे धीरे चलते हो की जंगल के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचने में तुम्हे 5 दिन लगे जाए और तुम मुझसे प्रतियोगिता करना चाहते हो रहने दो!

तुम हार जाओगे अरे खुद को देखो जो तेज चल तक नहीं पाता वो दौड़ेगा कैसे और अगर तुम दौड़ भी गए तो जीत नही पाओगे मुझसे।

कछुआ बोला, भाई पहले प्रतियोगिता तो हो जाए उसके बाद तय हो जाएगा की कौन हारेगा और कौन जीतेगा।

खरगोश, तय तो हो चुका की मैं ही विजेता हू लेकिन तुम्हारी तसल्ली के लिए हम प्रतियोगिता कर ही लेते हैं।

प्रतियोगिता का दिन आया कछुआ और खरगोश आए सारे जानवर भी उनकी दौड़ देखने वहां पहुंचे। सबको पता था की खरगोश ही जीतेगा लेकिन कछुआ सोच रहा था की आज तो मैं दिखा ही दूंगा की में भी दौड़ जीत सकता हूं।

चूहे ने लाल झंडी दिखा कर दौड़ शुरू करने। का इशारा किया खरगोश और कछुआ दौड़ने लगे खरगोश तो तेज दौड़ने के कारण जल्दी जल्दी आगे बढ़ने लगा लेकिन बेचारा कछुआ धीरे धीरे चलने की वजह से बहुत पीछे रह गया।

कुछ समय बाद खरगोश ने देखा की वो बहुत ज्यादा आगे आ चुका है और कछुए का तो कोई नामो निशान तक नही है दूर दूर तक ऐसे तो दौड़ने में मजा ही नही आ रहा पता नही कब तक पहुंचेगा ये कछुआ तब तक एक काम करता हूं यहीं एक पेड़ के नीचे थोड़ा आराम ही कर लेता हूं। वैसे भी उसको बोहोत समय लगेगा मेरे तक पहुंचने में ये सोच कर खरगोश वहीं एक पेड़ के नीचे लेट गया सुहावना मौसम था और हल्की हल्की हवा चल रही थी खरगोश ने अपनी आंखें बंद कर ली और बोला बस आंखे बंद कर लेता हूं सोऊंगा नही ये कह कर खरगोश आंख बंद करके लेट गया और न चाहते हुए भी उसको वहां नींद आ गई।

काफी समय के बाद कछुआ वहां आ ही गया और उसने देखा की खरगोश तो आराम से गहरी नींद में सो रहा है वो बोला, चलो इसको सोने देते हैं और मैं अपनी दौड़ पूरी कर लेता हूं कछुआ चलते चलते खरगोश से भी आगे निकल गया

जब खरगोश को होश आया तब उसने देखा की कछुआ अभी तक वहां नही पहुंचा है उसने सोचा की है भगवान ये कितना ज्यादा आलसी है इतना धीरे भी कोई चलता है भला

मुझे क्या मैं तो अभी भी बड़े आराम से दौड़ कर प्रतियोगिता जीत सकता हूं ये सोच कर खरगोश धीरे धीरे चलने लगा उसको लग रहा था की कछुआ अभी उसके पीछे है जब खरगोश थोड़ा और आगे गया तो उसने देखा की लेट लतीफ कछुआ तो प्रतियोगिता की रिबन को तोड़ने वाला है अब कोई चारा नहीं था खरगोश के पास कछुए ने थोड़ा चल कर ही रिबन तोड़ दी और बेचारा खरगोश उसका मुंह ही देखता रह गया अब खरगोश हार तो चुका ही था बल्कि अब तो उसका घमंड भी टूट चूका था सभी जानवरों ने कछुए का विजय सत्कार किया और सब बहुत खुश हुए।

खरगोश और कछुआ-2

एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे जंगल में पीकू नाम का एक कछुआ रहता था। वह तालाब में या फिर कभी बाहर आता इधर उधर घूमता और मौज मनाता ।

एक बार की बात है जब कछुआ तलाब में तैर रहा था,तो उसने देखा की एक खरगोश वहां से जा रहा है पर वो खरगोश उस जंगल का तो नही लग रहा था ।

वो तलाब से बाहर आया और खरगोश से पूछा, भाई तुम कौन हो? क्या तुम कही दूर से आए हो?

क्योंकि मैने तो तुम्हे यहां पहले कभी नही देखा।

खरगोश, हां भाई कछुए मैं यहां इस जंगल का नही हूं मैं बहुत दूर से आया हूं परंतु अब यहीं रहना चाहता हूं मेरा वहां कोई नही है सब मुझे पकड़ना चाहते हैं मुझे मारना चाहते हैं इसलिए मैं अब इसी जंगल में तुम सब के साथ रहना चाहता हूं।

कछुआ बोला, कहां से आए हो तुम क्या हुआ है तुम्हारे साथ मुझे बताओ।

तब खरगोश बोला मैं एक शहर से आया हूं मैं एक घर में रहता था वहां के लोग मुझे खाने को नही देते थे वहा के बच्चे मेरे साथ बहुत देर तक खेलते मैं जब थक जाता था फिर भी वो लोग मुझसे खेलते रहते।

और उसके बाद भी मुझे खाना नही दिया जाता कभी कभी ही मुझे थोड़ा खाने को और बाहर घूमने ले जाया जाता था लेकिन मुझे वहां बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता क्योंकि मेरे जैसा वहां और कोई नही था मैं बहुत अकेला रहता इसलिए एक दिन मैं वहां से भाग निकला और यहां इस जंगल में आ पहुंचा।

मुझे यहां आने के बाद सच में बहुत अच्छा लगा मैने तो पहली बार इतना बड़ा जंगल पेड़ नदियां ये सब देखें हैं अब मैं यहां से कभी नही जाऊंगा।

कछुआ बोला, हां भाई खरगोश अब तुम यहां रह सकते हो ये जंगल और यहां के सभी जानवर हम सब तुम्हारे दोस्त हैं चलो मैं तुम्हे अपने दोस्तो से मिलवाता हूं।

कछुआ और खरगोश दोनो एक मुर्गे के पास गए कछुआ बोला, मुर्गे भाई देखो आज इस जंगल में एक नया मेहमान आया है जो आज से मेरा खास दोस्त है।

मुर्गा बोला वाह भाई कछुए तुम्हारी तो लॉटरी लग गई चलो अच्छा है रहो तुम दोनो साथ में ये कह कर मुर्गा हंसता हुआ वहां से चला गया।

उसके बाद कछुआ एक बंदर के पास गया और बोला, देखो भाई बंदर आज एक नया मेहमान आया है जंगल में स्वागत करो इसका आज से ये मेरा दोस्त है ।

बंदर भी मुर्गे की तरह मुंह बनाते हुए बोला, तुम्हारा दोस्त है ये तुम करो इसका स्वागत हम क्यों करें देखते हैं ये दोस्ती कितने दिन की है और वो भी वहा से चला गया।

खरगोश तो बेचारा समझ ही नही पाया की ये सब ऐसा क्यों कह रहें हैं। और फिर वो दोनो भी वहा से चले गए और वापस तलाब के किनारे आकर बैठ गए।

अब कछुआ और खरगोश साथ साथ रहते साथ ही खेलते और मस्ती करते थे।

लेकिन ये सब एक चालाक लोमड़ी देख रही थी की वो कछुआ जिसके पास आज तक कोई जानवर नही गया जो उसके साथ कभी नही खेला आज ये खरगोश कहां से आ गया। मुझे कुछ करना पड़ेगा। लोमड़ी ने एक योजना बनाई और तब तो वो वहां से चली गई लेकिन वो बस एक मौके का इंतजार कर रही थी की कब मैं इन दोनो को अलग करूं।

एक बार की बात है खरगोश और कछुआ दोनो ही नदी के किनारे खेलने के बाद काफी थक गए और वहीं बैठ गए।

कछुआ बोला, खरगोश खरगोश! क्यों ना हम इस तलाब से मछलियां पकड़े देखते हैं कौन जीतता है।खरगोश बोला इसमें देखना क्या हैं में ही जीतूंगा और कौन जीतेगा भला!

कछुआ बोला ठीक है जिसने 5 मछलियां पकड़ी वही विजेता होगा। खरगोश बोला ठीक है!

यह कह कर दोनो मछली पकड़ने लगते हैं

खरगोश के हाथ 3 मछलियां आती हैं पर कछुए के हाथ पूरी 5 मछलियां आ जाती हैं।

ये देख कछुआ बोला देखा कहा था ना मैने मैं ही जीतूंगा बड़े आए मुझसे जीतने वाले हार कर कैसा लगा खरगोश भाई इतना कह कर कछुआ हंसने लगा कछुआ तो बस खरगोश के साथ मजाक ही कर रहा था लेकिन खरगोश को ये बात बिलकुल भी अच्छी नही लगी उसे बहुत गुस्सा आ रहा था क्योंकि कछुए ने उसे हरा कर उसके घमंड को भी तोड़ दिया था।

खरगोश झटके से वहां से उठा और बोला हा हा देख लिया की तुम जीते हो इतना खुश होने के भी जरूरत नहीं है ये कह कर खरगोश वहा से चला गया। वहीं दूर खड़ी लोमड़ी ने ये सब देख लिया और आखिरकार उसे वो मौका मिल ही गया जिसकी उसे तलाश थी।

वो खरगोश के पास गई और बोली, क्या हुआ खरगोश तुम इतना परेशान क्यों हो तुम्हारी लड़ाई हो गई क्या तुम्हारे दोस्त से??

खरगोश,नाम मत लो उसका वो नही है मेरा कोई दोस्त अगर होता तो मुझे हराता नही। लोमड़ी बोली, हां भाई सही कह रहे हो तुम तुम्हे तो उसके साथ रहना भी नही चाहिए अरे तुम अपने आप को देखो तुम इतने सुंदर हो तुम्हारे ये छोटे से दांत बड़े बड़े कान और तो और तुम इतना तेज भागते हो और उस कछुए को देखो ठीक से चल भी नहीं पाता तुम्हारी और उसकी दोस्ती। का तो कोई मेल ही नही है।

यह कह कर चालाक लोमड़ी वहां से चली गई और खरगोश उसकी बातो में आ गया।

अब वो कछुए के साथ नही दिखता था अब वो बाकी जानवरो के साथ रहने लगा और कछुए से दूरी बनाने लाग बाकी जानवरो के साथ रहते रहते खरगोश को बहुत घमंड होने लगा अब वो कछुए को कुछ न समझता। ऐसे ही एक बार खरगोश पेड़ के नीचे आराम करने लगा तभी वहां कछुआ आया और बोला , भाई खरगोश अब तुम मुझसे बात क्यों नही करते क्या किया है मैने अब न तो तुम मुझे देखते हो न मेरे साथ खेलते हो मुझे तुम्हारे बिना बिल्कुल अच्छा नही लगता।

खरगोश बोला तो मैं क्या करूं और ये अपना ढोंग बंद करो कोई दोस्त नहीं हो तुम मेरे अगर होते तो मुझे उस दिन हराते नही और वैसे भी अब मैं तुम्हारे साथ नही रहना चाहता मैं इतना सुंदर हूं और तुम!

इतने बदसूरत हो मुझे अब तुमसे कोई बात नही करनी जाओ यहां से उदास कछुआ वहां से चला गया

कुछ दिनो बाद जंगल में अचानक आग लग गई सारे जानवर अपनी जान बचाने के लिए इ धर उधर भागने लगे कई तो उस आग में आकर मर गए और कुछ अपनी जान बचा कर दूस रे स्थान पर चले गए खरगोश को समझ नही आ रहा था की वो कहां जाए बड़ी मुश्किल से वो अपनी जान बचा कर दूसरे जानवरो के पास गया और बोला कृपया करके मुझे भी अपने साथ ले लीजिए मेरा क्या होगा?!

लेकिन किसी ने भी खरगोश को अपने साथ नही लिया और कहने लगे की जाओ यहां से यहां अपनी जान बचाना ही मुश्किल हो रहा है तुम्हे कैसे बचाएंगे जाओ निकलो यहां से बेचारा खरगोश अब उसको कोई भी अपने साथ रखने को तैयार नहीं था।

तभी कछुए ने देखा की खरगोश आग में जलने वाला है जिसका उसे ध्यान ही नही है कछुआ उसके पास गया और बोला, जल्दी से मेरी पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हे यहां से कही दूर ले जाऊंगा नही तो यहां तुम मर जाओगे चलो मेरे साथ खरगोश कछुए की पीठ पर बैठ गया और कछुआ उसे अपने साथ तलाब में ले गया क्योंकि आग पानी तक तो नही आ सकती। खरगोश को अपने किए पर बोहोत गुस्सा आ रहा था उसने खरगोश के सामने हाथ जोड़ कर बोला, मुझे माफ कर दो कछुए मैने तुम्हारा इतना मजाक उड़ाया तुम्हारे साथ इतना दुर्व्यवहार किया फिर भी तुमने मेरी जान बचाई कछुए ने बोला कोई बात नही इस बहाने तुम्हे ये तो पता चला की कौन तुम्हारा अपना है और कौन पराया। उसके बाद दोनो खुशी खुशी रहने लगे।

लालच *का* फल bacchon ki मजेदार कहानियाँ

रामपुर नामक गाँव मे एक मछुआरा अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसका नाम महेश था। उसकी पत्नी बहुत लालची थी। मछुआरा रोज तालाब से मछली पकड़ता और उसे बाज़ार मे बेच कर अपना और अपनी पत्नी का पेट पालता था। इतनी मेहनत करने के बाद भी उसकी पत्नी उससे बहुत दुखी रहती थी और हमेशा महेश

पर गुस्सा करती रहती थी। महेश रोज तालाब से मछली पकड़ने जाता पर हर रोज उसके जाल मे बस एक दो ही मछली फसती थी। इस बात से महेश बहुत परेशान हो जाता और सोचने लगता की अब घर जाकर अपनी पत्नी को क्या बोलेगा मेरी पत्नी फिर मुझ पर गुस्सा करेगी। एक दिन महेश मछली पकड़ने तालाब पे गया उसने अपना जाल पानी मे डाला कुछ देर बाद जाल मे हल चल हुई तो महेशने जाल अपनी तरफ खीचा और देखा की उसमे दो ही मछली फंसी है ये देख उसने फिर से जाल फेका और फिर उसमे एक मछली फसी यह देख कर महेश मन ही मन बोला," हे भगवान कैसी किस्मत है मेरी दो मछली के अलावा और मछली फसती ही नही है जाल मे। अब घर जाऊंगा तो फिर मेरी पत्नी गुस्सा करेगी अब मैं क्या करुँ। यही सब सोचते सोचते महेश अपने घर चला जाता है। घर आकर महेश की पत्नी ने पुछा, क्यूँ जी आज कितनी मछली हाथ लगी। महेश ने कहा," आज भी एक दो मछली ही हाथ लग पाई है। उसकी पत्नी ने गुस्से मे कहा तुमसे कुछ नही हो पाएगा हमेशा ये दो चार ही मछली पकड़ना मैं तो तंग आ गयी हूँ तुमसे मैं अपने मायके चली जाऊंगी। मेरे तो भाग्य ही फुट गये तुमसे शादी करके। महेश ने निराश होकर कहा अब इतनी मेहनत करने के बाद भी मछलियाँ जाल मे नही फसती तो इसमे मेरी क्या गलती है इसमे मैं क्या कर सकता हूँ। तब महेश की पत्नी ने कहा, एक काम कर सकते है गाँव के बाहर जो जंगल वाला तालाब है उसमे तुम कल मछली पकड़ने जाओगे। महेश ने कहा तुम पागल हो गयी हो क्या उस जंगल मे कोई नही जाता वो डरावना जंगल है। उसकी पत्नी के कहा कोई नही जाता तभी तो उस तालाब मे कई सारी मछलियाँ होंगी अब तुम कल वहाँ जाओगे और मछली पकड के लाओगे।

मछली पकड के लाओगे bacchon ki kahani

अगले दिन महेश उसी जंगल वाले तालाब मे गया पर उस दिन भी महेश के हाथ एक ही मछली लग पाई। महेश दुखी होकर फिर भगवान से बोला," हे भगवान लगता है मेरी किस्मत ही खराब है। आज भी बस एक ही मछली हाथ लग पाई। अब फिर मेरी पत्नी गुस्सा करेगी।ये सोचते सोचते महेश उस मछली को लेकर बाजार मे बचने गया ओर आवाज लगाते हुए बोला, ले लो ले लो ताजी मछली के लो। पर उसकी मछली लेने कोई नही आया तो वो निराश होकर घर चला गया। घर जाकर उसकी पत्नी ने पुछा की आज कितनी मछली हाथ लगी। महेश बोला,"

आज भी बस एक ही मछली हाथ लगी। उसकी पत्नी गुस्से मे बोली तुम किसी काम के नही हो आज दुसरी जगह भेजा तब भी बस यही एक मछली पकड़ी तुमसे कुछ नही हो पाएगा अब ना घर मे अनाज है ना कुछ है खाने को आज बस यही मछली खानी पड़ेगी तुम्हे। इतना बोल कर उसकी पत्नी रसोई मे चली गयी और मछली काटने लगी जैसे ही उसने मछली को बीच से काटा उस मछली के पेट से एक सोने का अण्डा निकला ये देख कर महेश की पत्नी चौंक गयी और महेश को आवाज दी,"अजी सुनो जल्दी से यहा आओ देखो मछली के पेट से क्या निकला " यह सुन कर महेश जल्दी से रसोई मे आया तो देखा मछ्ली के पेट से सोने का अण्डा निकला है। महेश की पत्नी बोली हम तो अमीर हो गये सोना पा कर अब हमारे पास बडा घर होगा अच्छा खाना होगा मैं अपने लिये गहने लुंगी अब मैं अपनी सारी जरूरते पूरी करूंगी।ये सुन कर महेश बोला हाँ हाँ हम सब खरीदेंगे हम अमीर हो गये। महेश की पत्नी ने कहा,"अजी सुनो आप कल फिर वहाँजना मछली पकड़ने। महेश ने कहा, ठीक है। अगले दिन महेश फिर उसी तालाब पे गया और मछली पकड़ने लगा ओर फिर उसके हाथ बस एक ही मछली लगी उस मछली को लेकर महेश घर चला गया और अपनी पत्नी को मछली दी। उसकी पत्नी ने जब उसे काटा तो फिर एक सोने का अण्डा निकला उसकी पत्नी बहुत खुश हुई। अब तो वह लोग काफी अमीर हो गये नौकर- चाकर घर मे काम करने लगे महेश की पत्नी भी बहुत खुश थी। उसने अपने लिये गहने ओर नये कपडे लिये। पर महेश की पत्नी के मन मे लालच आ गया उसने अपने पति से कहा," की एक एक मछली लाकर ओर सोना निकाल कर कुछ नही हो रहा क्यूँ ना हम उस तालाब मे जाकर एक साथ सारी मछलियाँ निकाल के ले आए तो सोचो हम कितने अमीर हो जाएंगे सबसे अमीर। महेश ने कहा नही ज्यादा लालच करना सही नही है हमारे पास जो भी धन है हमे उसमे खुश रहना चहिये ज्यादा लालच बुरी बला है।

लालच बुरी बला bacchon ka kahani

उसकी पत्नी ने गुस्से मे महेश से कहा, तुम चुप रहो ये ज्ञान मुझे मत सिखाओ मैने ही कहा था तुम्हे उस तालाब पे जाने को तभी आज हम इतने अमीर हो पाये है अब कल चुप- चाप मेरे साथ तालाब पे चलना। इतना बोल कर उसकी पत्नी वहाँ से चली गयी। अगले दिन महेश ओर उसकी पत्नी दोनो उसी तालाब पे पहुँचे और तालाब का सारा पानी बाहर निकाल दिया। पर पानी निकालने के बाद उन्होने

देखा की उस तालाब मे एक भी मछली नही है। और पानी निकालने के बाद वो तालाब दल दल मे बदल गया। महेश और उसकी पत्नी उस दल दल मे धसते जा रहे थे।महेश ने कहा देख लिया ज्यादा लालच करने का फल अब हमे कौन बचेगा तुम्हारे लालच के चक्कर मे हम अपनी जान से हाथ धो बेठँगे। उसकी पत्नी जोर जोर से चिल्लाने लगी बचाओ कोई है कोई तो बचाओ हम मर जाएंगे प्लीज कोई तो बचाओ। और फिर दोनो चिल्लाते रहे पर वहाँ कोई नही आया और दोनो की मृत्यु हो गयी।

Laalchi saas story in hindi

Laalchi saas story in hindi

Hindi majedaar kahaniyan

साक्षी अपने मम्मी पापा के साथ रहती थी वो एक होनहार और होशियार लड़की थी अपनी कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद उसके मां बाप ने उसकी शादी करवा दी। अब साक्षी अपने ससुराल में अपने सास ससुर और पति की हर इच्छा पूरी करती और इस बात का ध्यान रखती की उन्हें शिकायत का कोई मौका न मिले कुछ महीनों तक तो सब कुछ ठीक था लेकिन अचानक फिर उसकी सास में बदलाव आना शुरू हो गया साक्षी कोई भी काम करती उसमे उसकी सास कोई न कोई कमी निकाल ही देती वो साक्षी को अब ताने भी मारने लगी।

सास,एक तो ये अपने मायके से कुछ लेकर नही आई और अब यहां आकर हमारा काम भी बिगाड़ रही है।

एक दिन की बात है साक्षी घर की साफ सफाई में लगी हुई थी की तभी उसकी सास वहां आई और बोली, बहु एक काम करेगी मेरा साक्षी बोली हा मां जी बोलिए क्या करना है?

सास, कुछ नही बस कुछ दिन बाद मुझे अपने एक रिश्तेदार की शादी में जाना है तो तुम अपने मायके से मेरे लिए एक सोने का हार ले आओ।

साक्षी, ये आप क्या कह रही हैं मेरे पापा के पास जो भी था वो सब तो उन्होंने मेरी शादी में लगा दिया अब मैं वहां से सोने का हार कैसे लेकर आऊं?

सास, देखो बहु लाना तो तुम्हे पड़ेगा नही तो तुम इस घर से बाहर जाओगी।हमेशा के लिए।

साक्षी अपने मायके चली जाती है और कैसे न कैसे करके सोने का हार तो ले आती है।सास हार देख कर बोहोत खुश होती है।लेकिन अभी भी सास को तसल्ली नही थी कुछ दिनो बाद फिर से उसने साक्षी को परेशान करना और उसे हर काम के लिए ताने मारना शुरू कर दिया और अगर साक्षी कुछ कहती तो उसे मारा भी जाता था।

एक बार साक्षी का पति उदास सा घर आया जब सास ने उससे पूछा तो उसने बताया की उसका उसके काम में बड़ा भारी नुकसान हुआ है। उसे वापस सही करने के लिए 25000 रुपए की जरूरत है पर मेरे पास तो अब कुछ नही बचा। तब सास बोली ये है ना ये लाएगी अपने मायके से।

साक्षी, नही मां जी अब नही पहले ही वो बोहोत दे चुके हैं आप लोगो को अब नही अब वो कहां से लायेंगे थोड़ी तो दया कीजिए। पर सास और पति नही माने और उसे मायके भेज ही दिया। वहां जाकर उसने अपने मां बाप को सब कुछ बताया तो उन्होंने कहा कि कोई बात नही बेटा अब जो हमारे भाग्य में है वो हमे मिलता ही है साक्षी के पापा ने अपने घर की गिरवी रख कर साक्षी को पैसे दिए जिन्हे लेकर वो अपने ससुराल आ गई। इसके बाद जो हुआ वो आपको दूसरे पार्ट में देखना होगा।

सारस की शिक्षा - Moral Story for Kids Hindi – हिंदी में कहानी

Kahani in hindi किसी नगर में एक किसान रहता था जिसका एक खेत था जो बोहोत बड़ा और ज्यादा मात्रा में फैला हुआ थाउसी खेत में एक सारस का जोड़ा रहता था। जो काफी समय से उसी खेत में था अब सारस के अंडे हो गए थेअंडे बड़े हुए और समय से उनमें से बच्चे भी निकले।

लेकिन बच्चो के बड़े और उड़ने योग्य होने से पहले ही फसल पक गई सारस बड़ी चिंता में थे क्योंकि किसान प्रतिदिन आता और फसल काटने की बात करता और उससे पहले उसे अपने बच्चो के साथ वहां से उड़ जाना चाहिए था पर बच्चे तो अभी छोटे थे उड़ कैसे पाते।वो सारस ने बच्चो से कहा," अगर हमारे पीछे से यहां कोई आता है तो तुम दोनो उसकी बात ध्यान से सुनना और जब हम आए तो हमे बताना। एक दिन की बात है सारस जब चारा लेकर शाम को अपने बच्चो के पास आया तो बच्चो ने कहा, आज किसान आया था। वो खेत के चारो तरफ घूमता रहा और किसी किसी जगह पर काफी देर तक खड़े होकर देखने भी लगा। वो कह रहा था की खेत अब काटने योग्य हो गया है आज ही जा कर गांव के लोगो से कहूंगा कि वो सब मिलकर मेरी खेत काटने में मदद करे।

सारस ने कहा , तुम लोग डरो मत! अभी खेत नही कटने वाला अभी खेत कटने में देर है तब तक तुम निश्चिन्त होकर यहां रहो।

ऐसे ही कुछ दिन बीत गए कुछ नही हुआ और खेत काटने वाला भी कोई नही आया।

कुछ दिनो बाद जब सारस शाम को अपने बच्चो के पास चारा लेकर लौटा तो उसने देखा कि बच्चे बोहोत डरे हुए हैं उसने बच्चो से पूछा क्या हुआ तुम्हे?

बच्चे बोले , अब तो हमे ये खेत छोड़ना ही पड़ेगा। आज किसान फिर से आया था और कह रहा था कि गांव के लोग बड़े स्वार्थी हैं कबसे उनसे कह रहा हूं पर मेरी मदद करने कोई नही आया। लगता है अब मुझे अपने भाईयो से ही कह कर खेत कटवाना पड़ेगा कल वो आयेंगे और पूरा खेत काट देंगे।

सारस बच्चो के पास बैठा और निश्चित होकर बोला,अभी तो खेत कटेगा नही हम लोग यहां कुछ दिन और रह सकते हैं। तब तक तुम भी ठीक ठाक उड़ने लगोगे अभी डरने की जरूरत नहीं है। कई दिन बीत गए अब सारस के बच्चे उड़ने लगे थे और निर्भय भी हो गए थे। एक दिन वो शाम को सारस से कहने लगे, ये किसान यहां रोज आकर यहां खड़ा होता है और खेत को घूरता रहता था ये हमे झूठ मूठ में डराता है इसका खेत तो कटेगा नही वो आज भी आया था और कह रहा था की मेरे भाई भी मेरी बात नई सुन रहे। सब के सब बहाना बना रहे हैं मेरे खेत की फसल अब सूखकर झड़ने लगी है। कल मैं खुद आऊंगा और पूरा खेत काट दूंगा।

इस बार सारस घबराकर बोला, चलो जल्दी करो!

अभी अंधेरा नही हुआ है दूसरे स्थान पर उड़ चलो।कल खेत जरूर कटेगा। बच्चे बोले क्यों इस बार खेत कट ही जाएगा ये कैसे?

सारस बोला," क्योंकि किसान जब तक गांव वालो और भाईयो के भरोसे था खेत कटने की आशा नही थी और जो दूसरों के भरोसे अपना काम छोड़ता है उसका काम कभी नही होता। लेकिन को खुद ही काम करने को तैयार होता है उसका काम जरूर पूरा होता है उसका काम रुका नही रहता।

किसान अगर कल खुद खेत काटने आने वाला है तो उसका खेत कटेगा ही। सारस उसी समय अपने बच्चो के साथ उड़ कर दूसरे स्थान चला गया।

कहानी से मिली सीख_

जो लोग दूसरों के भरोसे रहते हैं उनका काम कभी नही होता।

लेकिन को खुद काम करने को तैयार रहता है उसका काम रुका नही रहता

तो हमे कभी दूसरो पर निर्भर नही होना चाहिए।